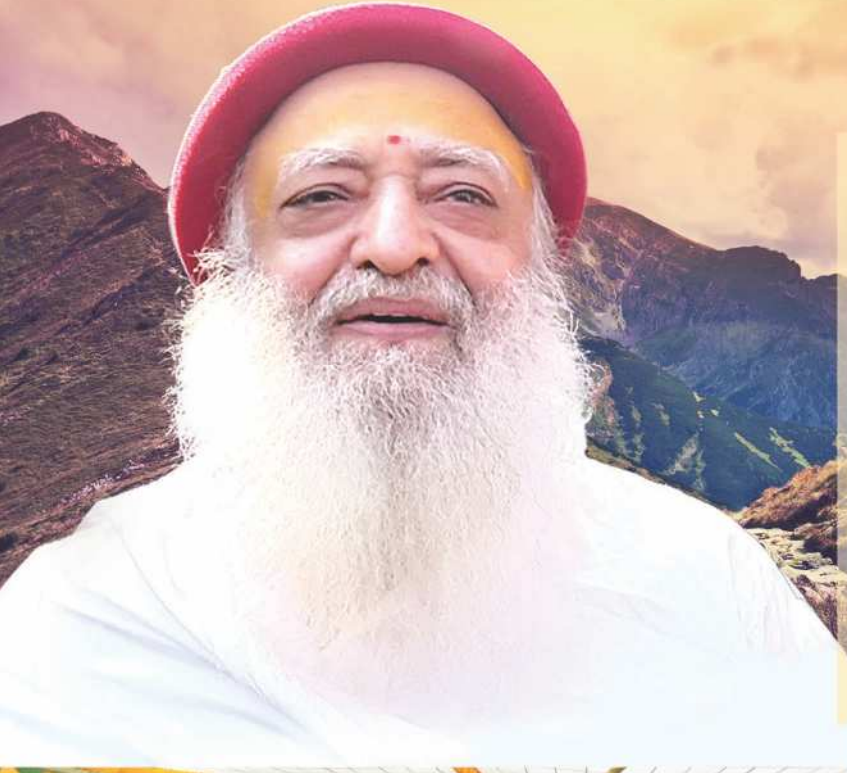


ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ जून २०१८
वर्ष : २७ अंक : १२
(निरंतर अंक : ३०६)
पृष्ठ संख्या : ३६
(आवरण पृष्ठ सहित)



कोई भी परिस्थिति शाश्वत नहीं है।
परिस्थिति को महत्त्व देकर अपनी शांति
भंग मत करो। सब बीत गया, बीत रहा
है, बीत जायेगा। बीतनेवाले को जो
जानता है उस ईश्वर में, आत्मा में डटे
रहो। किसीका बुरा सोचो नहीं, बुरा
चाहो नहीं, बुरा करो नहीं।

अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए,
सीमा पर तैनात प्रहरी की तरह सदैव
सावधान रहो।

— पूज्य संत श्री आशारामजी बापू



बेमाप है भक्तों की श्रद्धा ! पृष्ठ ९

पालनपुर (गुज.) में पूज्य बापूजी की गोद में ही
आपके सद्गुरु पूज्य लीलाशाहजी महाराज ने
संसार से विदा होते हुए अंतिम श्वास लिया था।

पढ़ें पृष्ठ २५ भी



यह तो बड़ा षड्यंत्र है जो इतने बड़े महापुरुष संत
आशारामजी बापू को फँसा दिया गया है।

— स्वामी अतुलकृष्णजी, वि.हि.प.



संतों को अगर सताया जाता रहा तो कुदरत
कोपायमान होगी। — महंत परमेश्वरदासजी
महामंत्री, भारत साधु समाज, दक्षिण गुजरात



आशारामजी बापू ने विश्वभर में सनातन धर्म की
ध्वजा फहरायी है।

— राजगुरु स्वामी राजेश्वरानंदजी, दिल्ली



आशारामजी बापू शुद्ध कंचन की तरह साफ-
स्वच्छ हैं।

— आचार्य जितेन्द्रजी आर्य, उज्जैन

देशी मदिरा ने जीवन बदल दिया ! २७
(अंतर्राष्ट्रीय नशामुक्ति दिवस : २६ जून)



पूर्ण विकास की
१६ सीढ़ियाँ १२



वर्षा ऋतु में स्वास्थ्यप्रदायक
अनमोल कुंजियाँ ३०



‘सत्’

न मौत से डरें न डरायें



‘चित्’

न अज्ञानी बनें न बनायें



‘आनंद’

न दुःखी हों न करें

जीवन-पथ को कल्याणमय बनाने के लिए

ऋग्वेद (मंडल ५, सूक्त ५१, मंत्र १५) में आता है :

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव । पुनर्ददताघ्नता जानता सङ्गमेमहि ॥

हम लोग सूर्य और चन्द्रमा की तरह कल्याणमय, मंगलमय मार्गों पर चलें। ‘ददता’ अर्थात् लोगों को कुछ-न-कुछ हितकर देते हुए, बाँटते हुए चलें। ‘अघ्नता’ अर्थात् किसीका अहित न करते हुए, तन-मन-वचन से किसीको पीड़ा न पहुँचाते हुए चलें। ‘जानता’ अर्थात् जानते हुए चलें, गुरुज्ञान का - वेदांत-ज्ञान का आश्रय लेते हुए चलें। दूसरों को समझते हुए चलें, अपने स्वरूप को समझते हुए आगे बढ़ें। हमेशा सजग रहें। ‘सङ्गमेमहि’ अर्थात् सबके साथ मिल के चलें, सबको साथ ले के चलें।

हम ‘सत्’ हैं अतः न मौत से डरें न डरायें; जियें और जीने में सहयोग दें। हम ‘चित्’ यानी चैतन्य हैं अतः न अज्ञानी बनें न बनायें; ज्ञान-सम्पन्न बनें और बनायें। और हमारा स्वरूप है ‘आनंद’ अतः हम दूसरों को दुःखी न करें और स्वयं दुःखी न हों; सुखी करें और सुखी रहें।

वेद भगवान स्नेहभरा, हितभरा संदेश देते हैं : **सङ्गमेमहि...** हम मिलते हुए चलें। एक स्वर में बोलें। मतभेद नहीं पैदा करें। जहाँ तक हमारा मत दूसरों के मत के साथ मिल सकता हो वहाँ तक मिलाकर रखें और जब मतभेद हो जायें तब जैसे आपको स्वतंत्र मत रखने का अधिकार है वैसे ही दूसरे को भी अपना स्वतंत्र मत रखने का अधिकार है। ऐसे में आप अपने मत के अनुसार चलो और दूसरों को उनके मत के अनुसार चलने दो। सब हमारे ही मत के अनुसार चलें यह विचारधारा बहुत तुच्छ, हलकी और गंदी है। यदि आपको कभी किसीमें दोष दिखे तो उस दोष को आप जरा पचाने की क्षमता रखो और उसका हो सके उतना मंगल चाहो, करो।

हमारे हृदय में सबके प्रति निर्मल प्रेम हो। हम सभीकी जानकारी लें और सँभाल रखें। हमारे द्वारा सबकी सेवा हो, हित हो और हम सबसे मिलते हुए आगे बढ़ते चलें। हम मंगलमय पथ पर नयी उमंग व कुशलता के साथ प्रसन्नचित्त होकर चलें और दूसरों को भी प्रसन्नता देते हुए चलें। जब हम स्वयं प्रसन्न रहेंगे तब दूसरों को भी प्रसन्नता दे सकेंगे और यदि हम स्वयं उदास, दुःखी या सुस्त रहेंगे तो दूसरों को प्रसन्नता कहाँ से देंगे ? अतः हमें हर परिस्थिति में सम और प्रसन्न रहना चाहिए।

वेद भगवान का उपरोक्त मंत्र सफलता-प्राप्ति हेतु भगवत्प्रसादरूप है।

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २७ अंक : १२ मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३०६
प्रकाशन दिनांक : १ जून २०१८
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
अधिक ज्येष्ठ-आषाढ़ वि.सं. २०७५

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेज जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम,
मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैनुफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों,
पौटा साहिब, सिमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व
न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष,
मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैनुफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactures) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता :

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम,
संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पृष्ठछाछ हेतु : (०७९) ३९८७७७४२
Email : ashramindia@ashram.org
Website : www.ashram.org,
www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी
वार्षिक	₹ ६५	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १२०	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २५०	₹ ३२५
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६००	---

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US \$ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US \$ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US \$ 80

Opinions expressed in this publication are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस अंक में...

- ❖ जीवन-पथ को कल्याणमय बनाने के लिए २
- ❖ गुरु संदेश * पूज्य बापूजी के अमृतमय संदेश ४
- ❖ परिप्रश्नेन... ५
- ❖ आप कहते हैं... ६
- ❖ बेमाप है भक्तों की श्रद्धा ! ९
- ❖ जीवन सौरभ ११
 - * भारी कुप्रचार में भी डटे रहे संत टेऊरामजी के साधक
- ❖ साधना प्रकाश * पूर्ण विकास की १६ सीढ़ियाँ १२
- ❖ प्रेरक प्रसंग * पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग १४
- ❖ जीवन जीने की कला १६
 - * मंत्रजप में आनेवाले विघ्न व उनसे रक्षा के उपाय
- ❖ साँई श्री लीलाशाहजी की अमृतवाणी १७
- ❖ विद्यार्थी संस्कार * एक ऐसा भी बालक... १८
 - * 'ऋषि प्रसाद' न होती तो... - मनन पंचाल * खोजो तो जानें...
- ❖ तेजस्वी युवा २०
 - * सूक्ष्म बुद्धि, गुरुनिष्ठा व प्रबल पुरुषार्थ का संगम : छत्रसाल
- ❖ महिला उत्थान * कर्मनिष्ठ श्यामो २१
- ❖ संत चरित्र * मोकलपुर के बाबा का प्रेरणाप्रद जीवन २२
- ❖ वैराग्य शतक * नित्य कल्याणकारी परम सुख २४
- ❖ योग-सामर्थ्य के धनी ब्रह्ममूर्ति साँई लीलाशाहजी की लीला
 - ओमभाई लख्यानी २५
- ❖ संतों की हितभरी अनुभव-वाणी * उनके उपकारों से... २६
 - * उनको चमगादड़ समझो - संत तुलसीदासजी
 - * अनंत मुक्ति का लाभ - संत पलटूदासजी
- ❖ प्रसंग प्रवाह * देशी मदिरा ने जीवन बदल दिया ! २७
- ❖ भक्तों के अनुभव २८
 - * मंत्रशक्ति का चमत्कार - निर्मला बड़गूजर
 - * हमारे गाँव में ऐसी शादी न हुई है, न होनेवाली है
 - * ऋषि प्रसाद के सभी सेवाधारी इसका लाभ अवश्य लें - रेवण गदगे
- ❖ स्वास्थ्य संजीवनी * वर्षा ऋतु में स्वास्थ्यप्रदायक अनमोल कुंजियाँ ३०
 - * विभिन्न रंगों की खान-पान की चीजों से बनायें सेहत
 - * त्रिदोष-शमन हेतु सुंदर उपाय * थकान भगाने का रामबाण इलाज
- ❖ संस्था समाचार ३३
 - * लड्डूगाँव आश्रम में सम्पन्न हुआ धर्म व संस्कृति रक्षार्थ ज्ञानयज्ञ
- ❖ सुखमय जीवन की अनमोल कुंजियाँ ३४

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग



* 'साधना प्लस न्यूज' चैनल टाटा स्काई (चैनल नं. ५४०), डिश टीवी (चैनल नं. ६७१), रिलायंस डिजिटल टीवी (चैनल नं. ४३१), रॉची में जीटीपीएल (चैनल नं. ९८१), बिहार में मोर्या सिटी (चैनल नं. ३११) तथा 'JioTV' एन्ड्रोइड ऐप पर उपलब्ध है।

मंगलमय इंटरनेट चैनल
www.ashram.org/live

गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : Rishi Prasad Official App, Rishi Darshan App & Mangalmay Official App

आप कहते हैं...

समाज को संतों और सज्जनों का सहयोग करना चाहिए



– स्वामी अतुलकृष्ण महाराज
केन्द्रीय मार्गदर्शक
विश्व हिन्दू परिषद

यह तो बड़ा षड्यंत्र है जो इतने बड़े महापुरुष संत आशारामजी बापू को फँसा दिया गया है। लेकिन सच्चाई तो सच्चाई रहेगी।

समाज में जहाँ कहीं भी ऐसा घट रहा है, उसकी मैं निंदा करता हूँ और जहाँ कहीं भी ऐसा हो, समाज को खड़े होना चाहिए, उसका प्रतिरोध करना चाहिए। संतों और सज्जनों का अगर लोग सहयोग नहीं करेंगे तो फिर दुर्जनों का बोलबाला हो जायेगा। मैं तो महाराजजी के साथ ही हूँ।

बापूजी पर लगाये गये आरोप गलत हैं

– योगी राकेशनाथजी, राष्ट्रीय अध्यक्ष
अ. भा. तीर्थ रक्षा सम्मान समिति, उत्तराखण्ड

संत आशारामजी बापू और कई संतों को झूठे आरोपों में फँसाया गया है। आशारामजी ने लोगों के सामाजिक, धार्मिक व आर्थिक जीवन को उन्नत करने के उत्कृष्ट कार्य किये हैं। उनके खिलाफ जो आरोप लगाये गये वे वास्तव में उनके जीवन व जीवनशैली के अनुरूप नहीं हैं। वे आरोप गलत हैं और संतों के खिलाफ ऐसा नहीं होना चाहिए।

कुदरती प्रकोप से, सर्वनाश से बचना हो तो...



– महंत परमेश्वरदासजी, महामंत्री
भारत साधु समाज, दक्षिण गुजरात
आशारामजी बापू निर्दोष हैं।

भारत के साधु समाज की तरफ से मैं यह संदेश देता हूँ कि ऐसे संतों को अगर सताया जाता रहा तो कुदरत कोपायमान होगी, आँधी-तूफान, भूकम्प, परमाणु बम और विश्वयुद्ध से दुनिया का नाश हो जायेगा। इस कुदरती प्रकोप से, इस सर्वनाश से बचना हो तो आशारामजी बापू जैसे संतों से प्रार्थना करो और उनको जल्दी-से-जल्दी बाहर लाओ।

निश्चित रूप से बापू बरी होंगे



– आचार्य श्री निवृत्तिनाथ येवले
प्रवचन-कीर्तनकर्ता व राष्ट्रीय
प्रचारक, वारकरी सम्प्रदाय
२५ अप्रैल २०१८ को पूज्य

संतश्रेष्ठ श्री आशारामजी बापू को जो सजा हुई है वह धर्म की दृष्टि से न्याय नहीं है। बापू जैसे एक संत-महापुरुष पर किसी स्त्री का आधार लेकर जो आरोप लगाये गये, उनका यथार्थ अनुसंधान किया नहीं और उनको बड़ी सजा दी गयी है।

निश्चित रूप से ऊपर के कोर्ट से बापूजी बरी होंगे। निरपराध बापूजी को जो यह कष्ट दिया जा रहा है, चाहे भले किसीका शासन हो, संत को ऐसा दंड नहीं मिलना चाहिए। मैं तो यही कहूँगा कि जो संतों को सताते हैं उनको उसका फल भोगना पड़ता है, निश्चित भोगना पड़ता है।

बापूजी शुद्ध कंचन की तरह साफ-स्वच्छ हैं



— आचार्य जितेन्द्रजी आर्य, उज्जैन

एक लड़की को नाबालिग बताकर षड्यंत्र के तहत तैयार किया गया जबकि वह बालिग थी और दूसरा उस लड़की के साथ कुछ भी छेड़खानी नहीं हुई, रेप तो बहुत दूर की बात है। धारा ३७६ व पॉक्सो एक्ट के तहत बापूजी को षड्यंत्र करके फँसाया गया। जो कानून दुष्कर्मियों के लिए बना था, उसकी सजा एक हिन्दू संत को दी गयी ! क्यों ? क्योंकि धर्मांतरणकारी ताकतों को इस देश में धर्मांतरण करना था। बापूजी लड़कियों को स्पर्श भी नहीं करने देते, बहुत दूर ही बैठने देते हैं। और उस रात की जो तथाकथित घटना बतायी गयी है, उस समय तो बापूजी सत्संग कर रहे थे और उसके बाद मँगनी-कार्यक्रम व भक्तों से बातचीत में व्यस्त थे।

मीडिया ने झूठी खबरें बनाकर इस केस को उछाला, बापूजी को बदनाम किया और हिन्दू धर्म को टारगेट किया। बापूजी के जो ६ करोड़ साधक हैं, उनके मन से इस देश की न्याय-व्यवस्था के प्रति तो आस्था घटी (अभी पूरी खत्म नहीं हुई है), साथ ही जो १०० करोड़ हिन्दू हैं, उनके मन में मीडिया ने स्वयं के प्रति संशय पैदा कर दिया है। देश के हिन्दू बापूजी को आज भी प्रेम करते हैं लेकिन मीडिया के प्रति उनका जो नजरिया था कि वह न्यूज दिखाता है व पारदर्शी है, वह बदलकर उन्हें समझ में आ गया है कि वह न्यूज नहीं, 'पेड न्यूज' (paid news) दिखाता है। बापूजी के बारे में झूठी, विकृत कहानियाँ दिखाकर मीडिया ने अपने-आपको बहुत गंदे स्तर पर ला के खड़ा किया है। आशारामजी बापू शुद्ध कंचन की तरह साफ-स्वच्छ हैं।



...इससे समाज का नुकसान हो रहा है

— स्वामी राजेश्वरानंदजी, राजगुरु
श्री राजमाता झंडेवाला मंदिर, दिल्ली

आशाराम बापूजी ने समाज के लिए क्या नहीं किया ? उन्होंने विश्वभर में सनातन धर्म की ध्वजा फहरायी, आदिवासियों को उठाने का प्रयास किया, अभावग्रस्त परिवारों की कन्याओं के विवाह कराये, अशिक्षितों को शिक्षा की तरफ लेकर गये, बिल्कुल गहरी नींद (अज्ञान-निद्रा) में सोये हुए करोड़ों लोगों को जगाने का प्रयास किया और कितनों को जगाया। बापूजी ने सनातन धर्म, समाज, राष्ट्र व विश्व के लिए, शांति के लिए कितने कार्य किये हैं ! कहीं-न-कहीं सनातन धर्म व आशाराम बापूजी के विरुद्ध साजिश की जा रही है। सनातन धर्म की विरोधी जो षड्यंत्रकारी ताकतें हैं, उनकी किसी-न-किसी कार्यवाही का यह नतीजा है जो स्थिति आज बनी हुई है। इससे आशारामजी बापू के आध्यात्मिक स्तर को कोई फर्क नहीं पड़ रहा होगा लेकिन पूरे राष्ट्र को फर्क पड़ रहा है, समाज का नुकसान हो रहा है।

मैं निश्चित विश्वास रखता हूँ परमात्मा के प्रति कि ऊपर के कोर्ट में जब यह केस जायेगा तो ऐसा कोई-न-कोई रास्ता जरूर निकलेगा कि ८१ साल के वयोवृद्ध संत को बरी किया जायेगा।

*** मनुष्य को चाहिए कि नित्य सत्संग-श्रवण करता रहे, सत्संग के द्वारा विवेक जगाकर हलके (विषय-विकारों के) रसों से अपने को बचाता रहे।**

*** ५० वर्ष के मनमाने साधन आदि से भी ब्रह्म-परमात्मा की इतनी समझ नहीं मिलती जितनी ब्रह्मज्ञान के सत्संग की आधी घड़ी में ही मिल जाती है। - पूज्य बापूजी**

बेमाप है भक्तों की श्रद्धा !

(प्रस्तुति : श्री निलेश ठक्कर, संवाददाता, रफ्तार न्यूज)

आशारामजी बापू पर चला केस केवल किसी एक व्यक्तित्व का मसला नहीं है बल्कि यह समाज के बहुत बड़े तबके से, धर्म व संस्कृति से जुड़ा अहम मुद्दा है। २५ अप्रैल को आशारामजी बापू को आजीवन कारावास की सजा सुनायी गयी। निर्णय आने के बाद भक्तों की प्रतिक्रिया जानने हेतु मैंने बातचीत की। प्रस्तुत हैं कुछ अंश :

प्रश्न : “अदालत के फैसले के बाद क्या आज भी आप बापू को मानती हैं ?”

योगिता सोनकुसवे, मुंबई : “कोर्ट का फैसला जो भी हो, उससे हमें कोई लेना-देना नहीं है। हमारी श्रद्धा बरकरार है और बढ़ती जायेगी क्योंकि हमें अपने अनुभव पर विश्वास है। जीवन में सद्गुरु का महत्त्व तो ईश्वर से भी ज्यादा होता है, बापूजी हमारे लिए ईश्वर से भी बढ़कर हैं।”

प्रश्न : “बापू को इतना मानने का कारण ?”

योगिता : “मैं १५ साल से बापूजी से जुड़ी हूँ। उसके पहले तो जीवन पूर्णतः स्वार्थ से भरा था। बापूजी के सत्संग में पता चला कि जीवन का वास्तविक अर्थ क्या है। परोपकार, ब्रह्मचर्य, अपनी संस्कृति, वेदों का ज्ञान क्या हैं। यह सब ज्ञान हमको सिर्फ बापूजी से ही प्राप्त हुआ है।”

प्रश्न : “क्या आश्रम में कभी ऐसी कोई गतिविधियाँ देखीं, जैसे बापू पर आरोप लगे हैं ?”

“मैंने ऐसा कुछ भी वहाँ नहीं देखा। वहाँ तो ‘दिव्य प्रेरणा-प्रकाश’ पुस्तक से ब्रह्मचर्य का पाठ पढ़ाया जाता है, नारी-उत्थान के कार्यक्रम चलते हैं। सारी धार्मिक और अच्छे-अच्छे संस्कारों की बातें सिखायी जाती हैं। वैसा कुछ होने का कोई सवाल ही नहीं उठता है। बापूजी पर यह आरोप लगाना सरासर गलत है।”

प्रश्न : “इतना दुष्प्रचार चल रहा है तो लोग क्या बोलेंगे, इसका डर नहीं लगता ?”

“कभी नहीं। हम तो फील्ड में जाते हैं, ‘ऋषि प्रसाद’ की सेवा करते हैं। बापूजी के केस का निर्णय आया उसके बाद भी रविवार को हम लोगों ने ३९७ सदस्य बनाये थे।”

प्रश्न : “महिला होने के नाते देश के शासन से, प्रशासन से आप क्या माँग करेंगी ?”

“जहाँ कोई दोष नहीं है फिर भी आपने ऐसा निर्णय दिया है तो इस पर फिर से विचार किया जाय और बापूजी को निर्दोष बरी किया जाय।”

प्रश्न : “हाल में सर्जित स्थितियों के बारे में आप क्या कहोगे ?”

योगेशभाई, मुंबई : “यह सब हिन्दू धर्म के विरुद्ध षड्यंत्र चल रहा है क्योंकि पूरे हिन्दुस्तान में सबसे ज्यादा भक्त बापूजी के हैं। अगर उनके ही भक्तों को तोड़ दिया जाय तो विधर्मियों का जो काम है वह जल्दी-से-जल्दी सफल होगा लेकिन जैसे-जैसे बापूजी के दर्शन की तड़प बढ़ रही है वैसे-वैसे हमारी श्रद्धा भी बढ़ती जा रही है।”

रामभाई, ओड़िशा : “१५ साल पहले मेरा जीवन बड़ा घृणित था। शराब-मांस सेवन, गलत कार्य... ऐसी कई बुराइयाँ मुझमें थीं लेकिन बापूजी के श्रीचरणों में जब गया और उनसे भगवन्नाम की दीक्षा मिली, उसी दिन से मेरा जीवन बदल गया। सारी गंदी आदतें छूट गयीं। आज मुझे भगवान व गुरु के सिवाय और कुछ अच्छा नहीं लगता। मैं अपने-आपको बड़ा भाग्यवान मानता हूँ कि बापूजी से मुझे दिव्य ज्ञान मिला। हम अंतिम श्वास तक गुरुचरणों से कभी नहीं हटेंगे।”

मैं तो भगवान से यही प्रार्थना करता हूँ कि संत के साथ ऐसा अन्याय न हो, उन्हें न्याय मिले क्योंकि संत सदा देश, दुनिया को धर्ममय बनाते हैं।''

देश-विदेश से आर्यी अन्य प्रतिक्रियाएँ



आदित्य राव, सीनियर बिजनेस एनालिस्ट, लंदन : मैं आशारामजी बापू के लिए आये हुए कोर्ट के फैसले से अत्यधिक आश्चर्यचकित हूँ ! एक संत, जिन्होंने अपना पूरा जीवन मानवता की सेवा के लिए लगा दिया, जिनके करोड़ों अनुयायी हैं, उन्हें ८१ वर्ष की आयु में आजीवन कारावास दे दिया गया !

हम सभी इस समय तथ्यों को जानें ताकि हम इस पूरे प्रकरण के पीछे की सच्चाई जान सकें ।



विश्वा जोशी, कुवैत : मेरे मत में बापूजी के पूरे केस का निर्णय ज्यादातर लड़की के बयान पर ही आधारित था और इसमें बचाव पक्ष द्वारा दिये गये अनेक तथ्यों को नजरअंदाज किया गया । इससे न्याय-प्रक्रिया के प्रति विश्वास को आघात लगा है ।



दलवीर सिंह, डिप्टी मैनेजर, मेकेनिकल सर्विस, इफको, अहमदाबाद : १९९८ से मैं बापूजी से जुड़ा हूँ और अपने को गौरवान्वित महसूस करता हूँ । बापूजी के लिए जो फैसला आया है उसका हम साधकों की श्रद्धा पर कोई भी फर्क नहीं पड़ा है और न पड़ेगा । हम तो बापूजी से जुड़ने से पहले कई जगह खोज में घूम रहे थे कि कहाँ है वह सच्चाई की मूर्ति जो हमें सही ज्ञान दे सके, सही मार्ग दिखा सके । यहाँ बापूजी के पास आकर हमें शांति मिली ।



अनूप केशरी, लखनऊ : पिछले ३० सालों से मैं पूज्य बापूजी से जुड़ा हुआ हूँ । हमें पूरा विश्वास है कि आज नहीं तो कल बापूजी निर्दोष बरी होकर हमारे बीच में आयेंगे । आज मैं अपनी दुकान में चारों तरफ बापूजी के पहले से भी ज्यादा फोटो सिर्फ इसलिए लगा के रखता हूँ ताकि लोगों को यह तो पता चले कि बापू के साधकों की श्रद्धा कम होनेवाली नहीं है । मेरे बापू ने जो मुझे सिखाया है, वह मैं लोगों को बताने की कोशिश करता हूँ । जो नहीं समझना चाहते, उन्हें 'ऋषि प्रसाद' देता हूँ ताकि उसमें बापूजी की कही हुई जो बातें हैं, उनसे लोग समझ सकें ।



दिव्या डोडानी, कोषाध्यक्ष, महिला उत्थान मंडल, गोंदिया : जो वाकई अपनी संस्कृति को बचाना चाहते हैं उन्हें संत आशारामजी बापू के ऊपर हो रहे अत्याचारों को रोकना होगा ।

तारा मौर्या, गोरेगाँव (महा.) : एक लड़की के इल्जाम पर विश्वास कर रहे हैं और लाखों महिलाएँ कह रही हैं कि 'आरोप गलत है' उस पर विश्वास नहीं कर रहे हैं, यह कैसी बात है ! बापूजी ने हमें संयम का पाठ पढ़ाया है और उनके बताये हुए नियमों पर चलकर हमें लाभ हुआ है ।

जय बिष्ट, दिल्ली : ऐसे ८१ साल के वयोवृद्ध संत, जिनके सान्निध्य में हम होते हैं तो हमारे मन में कोई दुर्विचार आता ही नहीं है बल्कि सद्विचार आने लगते हैं । तो ऐसे पावन संत कोई ऐसा कार्य करेंगे यह बात बिल्कुल हास्यास्पद लगती है ।

रत्ना, सुभाषनगर, दिल्ली : ऐसे कई अपराधी हैं जो सरेआम घूम रहे हैं और जो निर्दोष संत हैं उनको जेल में डाला जा रहा है, यह कहाँ का इंसाफ है ! (संकलक : प्रितेश पाटील) □

तो उन्होंने टेऊरामजी के भोजन, पानी व आवास को निशाना बनाया। उन्हें पानी देना बंद करवा दिया। टेऊरामजी को पानी के लिए कुआँ खुदवाना पड़ा। दुष्ट लोग कभी कुएँ से पानी निकालने की उनकी घिरनी, रस्सी आदि तोड़ देते तो कभी उनका बना-बनाया भोजन ही गायब करवा देते। उनके आवास को खाली कराने के लिए बार-बार नोटिसें भिजवायीं गयीं। उन्हें जेल भिजवाने की धमकियाँ दी गयीं।

ऐसा कुप्रचार किया गया कि 'ये संत नहीं हैं, नास्तिक हैं, स्वघोषित भगवान हैं।' एक बार तो ५०-६० दुर्जनों ने उनको लकड़ियों से मारने का प्रयास किया। कैसी नीचता की पराकाष्ठा है! कितना घोर अत्याचार! टेऊरामजी के कुप्रचार से जहाँ कमजोर मनवालों की श्रद्धा डगमगाती, वहीं सज्जनों और श्रद्धालुओं-भक्तों का प्रेम उनके प्रति बढ़ता जाता।

टेऊरामजी अपने आश्रम में एक चबूतरे पर बैठ के सत्संग करते थे। उनके पास अन्य साधु-संत भी आते थे अतः वह चबूतरा छोटा पड़ता था। उनके भक्तों ने उस चबूतरे को बड़ा बनवा दिया। इससे उनके विरोधी ईर्ष्या से जल उठे और वहाँ के पटवारी द्वारा वह चबूतरा अनधिकृत घोषित करा दिया। उन संत के विरुद्ध मामला दर्ज करवा के आखिर चबूतरा तुड़वा दिया गया।

इस प्रकार कभी अफवाहें फैलाकर तो कभी कानूनी दाँव-पेचों में उलझा के उन सर्वहितैषी संत को खूब सताया गया और ऐसा साबित किया गया कि मानो उन संत में ही दुनिया के सारे दोष हों। तब थोड़े समय के लिए भले ही दुर्जनों की चालें सफल होती दिखाई दीं पर वे दुष्ट लोग कौन-से नरकों व नीच योनियों में कष्ट पा रहे होंगे यह तो हम नहीं जानते लेकिन लोक-कल्याण व समाजोत्थान में जीवन लगानेवाले उन महापुरुष के पावन यश का सौरभ आज भी चतुर्दिक् प्रसारित होकर अनेक दिलों को पावन कर रहा है - यह तो सभीको प्रत्यक्ष है।



साधना प्रकाश

- पूज्य बापूजी

ये १६ बातें समझ लें तो आपका पूर्ण विकास चुटकी में होगा :

(१) आत्मबल : अपना आत्मबल विकसित करने के लिए 'ॐ... ॐ... ॐ... ॐ... ॐ...' ऐसा जप करें।

(२) दृढ़ संकल्प : कोई भी निर्णय लें तो पहले तीसरे नेत्र पर (भूमध्य में आज्ञाचक्र पर) ध्यान करें फिर निर्णय लें और एक बार कोई भी छोटे-मोटे काम का संकल्प करें तो उसमें लगे रहें।

(३) निर्भयता : भय आये तो उसके भी साक्षी बन जायें और उसे झाड़कर फेंक दें। यह सफलता की कुंजी है।

(४) ज्ञान : आत्मा-परमात्मा और प्रकृति का ज्ञान पा लें। यह शरीर 'क्षेत्र' है और आत्मा 'क्षेत्रज्ञ' है। हाथ को पता नहीं कि 'मैं हाथ हूँ' लेकिन मुझे पता है, 'यह हाथ है'। खेत को पता नहीं कि 'मैं खेत हूँ' लेकिन किसान को पता है, 'यह खेत है'। ऐसे ही इस शरीररूपी खेत के द्वारा हम कर्म करते हैं अर्थात् बीज बोते हैं और फिर उसके फल



विद्यार्थी संस्कार



एक ऐसा भी बालक...



श्री उड़िया बाबा

संत उड़िया बाबा ब्रह्मानंद की मस्ती में जिला बदायूँ के किसी गाँव में से जा रहे थे। पीछे से 'बाबा-बाबा' की आवाज सुनाई दी। आप आगे बढ़ते गये। पीछे से आकर किसीने आपका हाथ पकड़ लिया। आपने मुड़कर देखा तो ग्वाले का एक लड़का दिखाई दिया। वह चरणों में गिर गया और हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा : "बाबा ! पास में ही मेरी झोंपड़ी है, कृपा करके पधारो। स्नान, भोजन करके दास को कृतार्थ करो।"

बाबा : "भाई ! हमें आगे जाना है, फिर कभी देखा जायेगा।" पर बालक ने एक न सुनी।

"अच्छा, तू नहीं मानता तो चल।"

बाबा का हाथ पकड़े वह उन्हें अपनी झोंपड़ी पर ले गया। फिर एक डोल पानी भर के ले आया और बोला : "बाबा ! आप स्नान करो, मैं अभी गाँव से रोटी लाता हूँ। आप कहीं चले मत जाना। आप संत हैं, आपको मेरी सौगंध है।"

बाबा : "जा, हम कहीं नहीं जायेंगे।"

बालक दौड़ा-दौड़ा घर पहुँचा और अपनी माता से गिड़गिड़ाकर बोला : "माँ ! एक बाबा आया है, वह कई दिनों का भूखा है। उसे खाने के लिए रोटी दे दे, बड़ा पुण्य होगा।"

माँ : "चल भाग यहाँ से... रोज साधुओं के लिए रोटी ले जाता है। किसीको एक दिन का भूखा

बताता है और किसीको दो दिन का !"

बालक माँ के पैरों पर पड़ गया और बोला : "माँ ! आज तो दे ही दे, फिर भले मत देना। यह बाबा बहुत दिनों का भूखा है।"

बालक के बहुत अनुनय-विनय करने पर माँ ने मोटी-मोटी रोटियाँ बना के उसे दीं। रोटियाँ और छाछ लेकर वह निकल पड़ा और उसके पिता भी उसके पीछे निकल पड़े।

पिता : "क्यों महाराज ! आप कितने दिनों के भूखे हैं ?"

"मैंने रात को रोटी खायी थी, मैं भूखा... ?"

"आपने कहा कि कई दिन के भूखे हैं !"

"नहीं, मैं तो चला जा रहा था, इसने जिद की कि रोटी खाये बिना न जाने दूँगा।"

"तूने झूठ बोला !" ऐसा कहकर पिता ने बालक के मुँह पर जोर की चपत लगायी।

बाबा : "बेटा ! तू झूठ क्यों बोलता है ?"

"बाबा ! बिना झूठ बोले ये रोटी नहीं देते।"

"झूठ बोलना पाप है, उससे नरकों में जाना पड़ता है, पता है ?"

"वहाँ क्या होता है बाबा ?"

"घोर यातनाएँ भोगनी पड़ती हैं।"

"बाबा ! मैं झूठ बोलने के कारण भले ही नरक में जाऊँ पर मुझसे संत-सेवा कभी न छूटे।"

(शेष पृष्ठ १९ पर)

प्यारे विद्यार्थियो !

तुम ऐसे कुलदीपक बनना

- पूज्य बापूजी

प्यारे विद्यार्थियो ! हजार-हजार विघ्न-बाधाएँ आयें फिर भी जो संयम, सदाचार, सेवा, ध्यान, भक्ति और आत्मवेत्ता गुरु के सत्संग-कृपा का रास्ता नहीं छोड़ता वह जीते-जी मुक्तात्मा, महान आत्मा, परमात्मा के ज्ञान से सम्पन्न सिद्धात्मा जरूर हो जाता है और अपने कुल-खानदान का भी कल्याण कर लेता है। तुम ऐसे कुलदीपक बनना।

मोकलपुर के बाबा का प्रेरणाप्रद जीवन

सन् १९३० के लगभग की बात है। मैंने सुना, काशी से ६-७ कोस की दूरी पर गंगा-किनारे एक सिद्धपुरुष रहते हैं। उनकी कुटिया जिस स्थान पर है उसे गंगाजी चारों ओर से घेरे रहती हैं। वे किसीसे कोई संबंध नहीं रखते। कोई दुखिया, रुग्ण उनके पास आता है तो उसके लिए कुछ घास-फूस उठा के दे देते हैं और वह भला-चंगा हो जाता है। कोई कहीं दुःखी होता तो बाबा उसके लिए व्याकुल हो उठते थे। उनके हृदय में अपार करुणा थी, जीवों पर स्वाभाविक कृपा थी और यही संतों का विशेष गुण है।

अपने एक मित्र के साथ मैं उनके दर्शनार्थ गया। कई गाँवों में घूमने के बाद गंगा-किनारे एकांत स्थान में बैठे हुए वे मिले।

उनकी बातों से मालूम हुआ कि वे हमारी परेशानी देख रहे थे और हमें दर्शन देने के लिए ही वहाँ ठहर गये थे। उन्होंने ग्राम्य भाषा में हमसे कहा : “भगवान की लीला बड़ी विलक्षण है। देखो ! इस शरीर को कहाँ-से-कहाँ लाकर रख दिया। तुम्हें भी न जाने कितना घुमा के मेरे पास पहुँचाया। क्या तुम सीधे मेरे पास नहीं आ सकते थे ? इसमें भी कुछ रहस्य होगा, इसमें भी उनकी कुछ लीला होगी !” उस दिन वहीं कुछ किसान दही लेकर आ गये और बाबा ने हम दोनों को दही खिलाया। यह उनका पहला स्वागत था। उन्होंने कहा : “अच्छा अब जाओ, कभी फिर मिलेंगे !”

गँवार भाषा में ऊँचे तत्त्व की बात

दूसरी बार जब हम गये तो बाबा ने हमारे पहुँचते ही उपदेश शुरू किया। उन्होंने कहा : “तुम भगवान को निराकार मानो तो निराकार, साकार मानो तो साकार। निराकार के संकल्प से एक बूँद

जल की **— स्वामी अखंडानंदजी सरस्वती** सृष्टि हुई अथवा साकार के पसीने से एक बूँद जल निकला। उसीसे सारे संसार की सृष्टि हुई। उसे कोई ‘मूल प्रकृति’ कहते हैं, कोई ‘कारणवारि’ कहते हैं और मैं ‘गंगाजी’ कहता हूँ।

गंगाजी में ही घास व मांस - दोनों की सृष्टि हो रही है। गंगाजी ही मिट्टी से घास बनती हैं और घास, वनस्पति, औषधियों के द्वारा मांस बनता है। मांसमय सब शरीर हैं, मांस गल के मिट्टी बन जाता है और मिट्टी पुनः घास के रूप में परिणत हो जाती है। यह क्रम बहुत दिनों से चल रहा है, यह सब गंगाजी में गंगाजी ही बनती हैं और वह ‘बाँगर’ अलग बैठ के यह सब खेल देखता रहता है।”

बाबाजी प्रायः ईश्वर को ‘बाँगर’ कहा करते थे। (बाँगर उस भूमि को कहते हैं जो ऊँचाई पर स्थित हो और नदी, झील आदि के बढ़ने पर भी पानी में न डूबे। ऐसे ही परमात्मा सबके साक्षी होकर सब खेल देखते हैं।) वे इसकी व्याख्या भी करते थे। कहते थे : “जो अपने-आपमें अपने-आप ही संतुष्ट है उसे इतनी उपाधि बनाने की क्या आवश्यकता थी ? बिना मतलब इतना जंजाल बढ़ा लेना उसका बाँगरपन है।

रोज देखते हो, पंचभूतों की सृष्टि कैसे होती है ? तुम एक आसन पर शांत बैठे हो। मैं इसे आकाश का रूपक देता हूँ। अब तुम किसी अनिवार्य कारण से दौड़ पड़ो। इसे हम वायु कहेंगे। दौड़ने से जो गर्मी होगी वह अग्नि है। गर्मी से जो पसीना होगा वह जल जमकर मैल बन जायेगा - मिट्टी बन जायेगा। (सृष्टि की उत्पत्ति के समय आकाश तत्त्व से वायु तत्त्व, वायु से अग्नि, अग्नि



बालों के उत्तम रक्षण-पोषण हेतु गुणकारी प्राकृतिक उपहारों का संग्रह

केश सुरक्षा
(आयुर्वेदिक शैम्पू)

सदाबहार
तेल

घृतकुमारी
(Aloe vera) शैम्पू

केश पोषक
(Hair care)

आँवला-भृंगराज
केश तेल



५०० ग्राम
₹ ६०



१०० मि.ली.
₹ ५०



२०० मि.ली.
₹ ७५



१०० मि.ली.
₹ ४०



२०० मि.ली.
₹ ७०

बालों की सम्पूर्ण सुरक्षा व पोषण हेतु अवश्य खरीदें ।
संग्रह का मूल्य : ₹ २९५ (₹ ९० डाक खर्च अलग से)

बनाये रखने तथा स्मरणशक्ति बढ़ाने में सहायक ।
* सिरदर्द, मस्तिष्क की कमजोरी में लाभप्रद ।

इस संग्रह से पायें ढेरों लाभ : * बालों का झड़ना, असमय सफेद होना, गंजापन, रूसी आदि समस्याओं में लाभकारी । * बालों को मुलायम, काले, मजबूत, लम्बे, घने तथा चमकदार बनाने में सहायक । * बालों के सूक्ष्मतर पोषण, उनकी वृद्धि, जड़ों की मजबूती में तथा घुँघराले बालों की लोच को कम करने में असरकारक । * गर्मी के नुकसान से हो बालों की सुरक्षा । * दिमाग को ठंडा

हर्बल साबुनों स्वास्थ्य एवं त्वचा की सुरक्षा करनेवाला सुंदर उपहार-संग्रह की शृंखला

लाभ : * रोमकूप खोलें, त्वचा में लायें निखार । * रोगाणुनाशक एवं चर्मरोगों जैसे - चेहरे के कील-मुँहासे, दाग-धब्बों आदि को मिटाने में लाभदायी ।

एलोवेरा
जेल



₹ १५



₹ २०



₹ १५



₹ १५



₹ १५



₹ १५



₹ १५



₹ २०



१०० ग्राम
₹ ४५

उत्तम गुणवत्तायुक्त, प्राणिजन्य चरबीरहित संग्रह का मूल्य : ₹ १७५ (₹ ७५ डाक खर्च अलग से)

शीतलता-प्रदायक, स्वास्थ्यवर्धक, गुणकारी गुलाब, पलाश, ब्राह्मी शरबत व लीची, सेब, अनानास, अंगूर पेय तथा मैंगो ओज का लाभ लेना न भूलें ।

आँवला अचार

घृतकुमारी रस



४०० ग्राम
₹ ४०

* बेहतरीन आँवलों से बना यह अचार अत्यंत स्वादिष्ट है । * भोजन में लेने से बढ़िया पाचन होता है । * यह त्रिदोषशामक तथा दीर्घायु, आरोग्य, बल प्रदाता है । * दिमाग व हृदय को ताजगी व शक्ति देता है । * यह स्वप्नदोष, श्वेतप्रदर, चेहरे के फोड़े-फुँसी, आँखों की जलन तथा रक्त की कमी दूर करता है । संग्रह का मूल्य : ₹ ११५ (₹ ७५ डाक खर्च अलग से)

(Aloe vera juice) ऑरेंज फ्लेवर में * त्रिदोषशामक, जठराग्नि वर्धक, लीवर के लिए वरदानरूप । * विविध त्वचा-विकारों, पीलिया, नेत्र व स्त्री रोगों, आंतरिक जलन आदि में लाभदायी ।



५०० मि.ली.
₹ ७५

उपरोक्त सामग्री आप अपने नजदीकी संत श्री आशारामजी आश्रम या समिति के सेवाकेन्द्र से प्राप्त कर सकते हैं । अन्य उत्पादों व सभीके विस्तृत लाभ आदि की जानकारी के लिए एवं घर बैठे सामग्री प्राप्त करने हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगवाने हेतु सम्पर्क : (०७९) ३९८७७३०, ई-मेल : contact@ashramestore.com

भोजन, जीवनोपयोगी सामग्री, फल व शरबत वितरण



पहेंपुछ ३३
लड्डूगाँव, जि. कालाहांडी (ओड़िशा)



भिलाई
जि. दुर्ग (छ.ग.)

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2018-20
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2020)
Licence to Post Without Pre-payment.
WPP No. 08/18-20
(Issued by CPMG UK, valid upto 31-12-2020)
Posting at Dehradun G.P.O. between
1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st June 2018

विद्यार्थी शिविरों में अपने जीवन का सर्वांगीण विकास करते विद्यार्थी



दौसा (राज.)



बालासोर (ओड़िशा)



गाजियाबाद (उ.प्र.)



कटक (ओड़िशा)



मुर्तिजापुर (महा.)



आमेट (राज.)



उल्हासनगर (महा.)



अकोला (महा.)



वाशिम (महा.)



भोपाल



बड़गाँव, जि. खरगोन (म.प्र.)



गायखास, जि. डोंग (गुज.)

जीवन को सुखमय बनानेवाली 'ऋषि प्रसाद' घर-घर पहुँचाने के लिए संकल्पबद्ध पुण्यात्मा



रवालिपर



जबलपुर



कोलकाता

गर्मी से राहत देतीं शरबत एवं छाछ वितरण सेवाएँ



टोपी, शरबत एवं बोतल वितरण



लाखनऊ



उल्हासनगर

विद्यालयों में सम्पन्न योग व उत्त संस्कार शिक्षा कार्यक्रमों की कुछ झलकें



अलीगढ़ (उ.प्र.)



पटियाला



झाँसी



अमरावती (महा.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।